

डीपीटी/टीडी टीकाकरण अभियान का शुभारंभ

चर्चा में क्यों?

16 अगस्त, 2022 को मध्य प्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी ने भोपाल के कमला नेहरू कन्या स्कूल सभागार में डीपीटी/टीडी टीकाकरण अभियान के राज्यस्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके साथ ही उन्होंने अभियान पर केंद्रति पोस्टर का वमोचन भी किया।

प्रमुख बदि

- डीपीटी, टटिनेस और डडिथीरिया जैसी जानलेवा बीमारी से बचाने के लिये यह टीकाकरण अभियान 31 अगस्त तक चलेगा।
- स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी ने कहा कि मध्य प्रदेश डडिथीरिया उन्मूलन में अग्रणी राज्यों में से एक है। डीपीटी और टीडी के टीके 36 लाख कशिर-कशिरियों को लगाए जाएंगे। टीका 5 से 6 वर्ष, 10 वर्ष और 16 वर्ष के बच्चों को लगाया जाना है। स्कूल और आँगनबाड़ी केंद्रों में नःशुल्क टीके लगाए जाएंगे।
- स्वास्थ्य मंत्री ने जन-प्रतनिधियों, शकिषकों और पालकों से अभियान में शत-प्रतशित बच्चों का टीकाकरण करवाने में सहयोग करने की अपील की।
- डीपीटी (डीटीपी और DTWP भी) संयोजति टीकों की एक श्रेणी को संदरभति करता है, जो मनुष्यों को होने वाले तीन संक्रामक रोगों (डडिथीरिया, परटुससि (काली खांसी) और टटिनेस) से बचाव के लिये दिये जाते हैं।
- 'D' का मतलब डडिथीरिया, 'T' का मतलब टटिनेस और 'P' का मतलब परटुससि है। ये तीनों बैक्टीरिया से होने वाली गंभीर बीमारियाँ हैं। डडिथीरिया और परटुससि एक वयकृत् से दूसरे वयकृत् में फैलती हैं, जबकि टटिनेस कट और घावों के माध्यम से शरीर में प्रवेश करता है।
- टीडी टीका टटिनेस और डडिथीरिया से बचाव के लिये दिया जाता है। यह केवल 7 वर्ष और उससे अधिक उमर के बच्चों, कशिरों और वयस्कों के लिये दिया जाता है। टीडी आमतौर पर हर 10 साल में बूस्टर खुराक के रूप में दिया जाता है, या गंभीर या गंदे घाव या जलने की स्थिति में 5 साल बाद दिया जाता है।
- ज्जातव्य है कि डडिथीरिया एक गंभीर बैक्टीरियल संक्रमण होता है, जो नाक और गले की श्लेष्मा झलिली को प्रभावति करता है। यह एक छाले के रूप में दखिाई देता है और गले में सूजन आना, गले में दर्द होना, कुछ खाने-पीने में दर्द होना, इसके लक्षण हैं। इस संक्रमण से बचने के लिये टीका बहुत ज़रूरी है।
- टटिनेस आमतौर पर पूरे शरीर में मांसपेशियों के दर्दनाक कसने का कारण बनता है। टटिनेस के कारण जबड़ा बंद हो सकता है, जिसके परणामस्वरूप पीड़ति अपना मुँह नहीं खोल सकता और न ही नगिल सकता है।
- परटुससि (काली खांसी) गंभीर खांसी का कारण बनता है। इससे शशुओं के लिये खाना, पीना या सांस लेना भी मुश्कल हो जाता है। परटुससि से नमोनिया, आक्षेप, मस्तषिक क्षति और मृत्यु हो सकती है।